13 दादा-दादी के साथ

आज पिंकी और उसका छोटा भाई विकी बड़े प्रसन्न थे। सात समुद्र पार इंग्लैण्ड से उनके हम उम्र भाई-बहन राहुल व पद्मिनी जो आ रहे थे। यद्यपि वे उनके अपने चाचा श्री विपिन प्रताप सिंह के बच्चे थे फिर भी पिंकी व विकी की उनसे अब तक कभी मुलाकात नहीं हुई थी।

पूरा परिवार अतिथियों के स्वागत की तैयारी में लगा था। दादा-दादी, पापा-मम्मी और पिंकी व विकी ही नहीं घर के नौकर, दाई, माली, चौकीदार इत्यादि सभी कई दिनों से घर की सफाई में लगे थे।

राहुल व पद्मिनी को अपने नए संबंधियों से मिलकर अच्छा लगा। दिन भर परिवार के लोगों का आना-जाना लगा रहा। रिश्ते के ढेर सारे भाई-बहन, चाचा-चाची, दादा-दादी, बुआ-फूफा इत्यादि से प्रथम बार बच्चों की भेंट हुई।

''अच्छा? यही है तुम्हारी बेटी?''

''कितने बड़े हो गए हैं ये दोनों?''

''लगता है बेटी माँ जैसी है। वही नीली आँखें और काले बाल। बड़ी सुंदर निकली है।''

''अच्छा किया, इन्हें हिंदी सिखाई। नहीं तो हमारी बात समझ न पाते।''

''अच्छी ट्रेनिंग दी तुमने इनको।'' इत्यादि जैसे शब्द कानों में गूँजते रहे। डैड गर्व से फूले न समाते थे। पद्मिनी और राहुल को भी सबका आकर्षण का केन्द्र बनकर खूब आनन्द आ रहा था। इतनी प्रशंसा व प्रेम देने के लिए इंग्लैण्ड में कोई नहीं था। मम्मी के केवल एक अविवाहित भाई थे जिनसे दो-तीन वर्ष पहले मुलाकात हुई थी। एक ग्रैंडपा (नाना) थे जिनसे क्रिसमस के समय एक-एक उपहार मिल जाता था। नाना ने अपनी पहली पत्नी अर्थात् मम्मी की माँ की मृत्यु हो जाने के पश्चात् दूसरा विवाह कर लिया था तथा अपनी नई पत्नी के साथ ही रहते थे। कुल मिलाकर दो रिश्तेदार थे और उनसे भी भेंट कभी-कभार

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

होती थी।

शाम हो गई। आज फिर बिजली गायब थी।

''ओ हो! आई एम सो सॉरी!'' पिंकी ने मुँह बनाकर कहा, ''तुम सोचोगे कैसी कंट्री है इण्डिया?''

पद्मिनी केवल मुस्करा दी पर मन ही मन वह सोच रही थी- अजीब बच्चे हैं पिंकी और

विकी! अपनी भाषा होते हुए भी वे न जाने क्यों सदा अँग्रेजी में ही बोलते हैं। उन्हें मालूम था राहुल और पद्मिनी दोनों भाषा भली-भांति समझ लेते थे। फिर भी वे अक्सर उनसे इंग्लिश में क्यों बात करते हैं? पद्मिनी तथा राहुल यहाँ आते समय प्रसन्न थे। उन्होंने सोचा था भारत में हिन्दी का अच्छा अभ्यास हो जाएगा, परंतु यहाँ कोई भी ठीक से हिन्दी नहीं बोलता था। बीच-बीच में अँग्रेजी, यही नहीं, अक्सर पिंकी-विकी आपस में भी विदेशी भाषा का ही प्रयोग करते थे। ऐसा क्यों?

आँगन में रमुआ को लालटेन जलाते देख राहुल उसके निकट जा पहुँचा। ''मैं भी

जलाऊँ?'' कह वह उसकी मदद करने लगा। जब पैट्रोमैक्स की लालटेन झक से जल उठी तो उसे बड़ा आनन्द आया। वह लालटेन उठा कर दादी के पास गया।

''लाओ बेटा, इधर,'' दादी की खाट बाहर पीछे की तरफ बिछी थी। ''आओ, मेरे पास बैठो। अपने हालचाल सुनाओ।''

दोनों रस्सी से बुनी चारपाई पर बैठ गए। कितना रोमांचकारी लग रहा था वातावरण, लालटेन की सीमित रोशनी में चारों ओर की टूटी दीवारें, फर्श पर पड़ी दरारें तथा कोनों में बेतरतीब बिखरी लकड़ियों व कोयलों के ढेर अदृश्य हो गए। रह गया दादी का मधुर, प्रेम भरा सामीप्य। दादी ने पद्मिनी को अपने से सटा कर बिठा लिया था और उसके रेशमी बालों को प्यार से सहलाने लगीं। पद्मिनी को यह अच्छा लग रहा था।

बाहर काली रात के साए में मेंढ़कों का टर्राना सुनाई दे रहा था। ऊपर नभ में ढेर सारे तारे छिटके थे। पद्मिनी को लगा जैसे वे किसी बीते हुए अतीत में पुनः आ गए थे। यही विशेष बात थी डैड के देश की, प्राचीन जीवन व सभ्यता से अब भी वह कितना जुड़ा हुआ था।

''बेटा, तुमने रामायण-महाभारत की कहानियाँ सुनी हैं?'' दादी का कोमल स्वर सुन वह उत्सुकतापूर्वक उनकी ओर देखने लगी।

''ओह दादी! आप फिर अपने किस्से-कहानी लेकर बैठ गईं?'' पिंकी के स्पष्ट स्वर ने पद्मिनी को झकझोर कर फिर वर्तमान में ला दिया।

''सुनाइए न दादी।'' राहुल बोला, ''डैड ने कुछ सुनाया है परंतु.....।''

''ओह नो, नॉट अगेन? फिर वही पुरानी कथाएँ?'' पिंकी ने मुँह बनाया।

''बेटा, पुराण कथाओं में कितना ज्ञान भरा है। हमारे जीवन के सिद्धांतों, मान्यताओं व मूल्यों के विषय में इनसे पता चलता है,'' दादी बोली।

''आजकल के साइंस के जमाने में तुम्हारी कहानियाँ बिल्कुल फिट नहीं बैठतीं।'' पिंकी ने बहस की, ''क्या मिलेगा हमें उनसे?''

''जो ढूँढ़े उसे मिले!'' बहस सुन दादाजी भी आ गए और कहा, ''किस्सों द्वारा ही पहले आम लोगों को अच्छे-बुरे का ज्ञान मिलता था। मनोरंजन के साथ आदर्श व मूल्य समझाने का कार्य भी हो जाता था।''

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

''एक पंथ दो काज।'' दादी हँसी।

''हाँ, हाँ हम सुनेंगे।'' कहते हुए राहुल व पद्मिनी दादी के और निकट सरक आए। फिर कहानियों का ऐसा दौर चला कि कब भोजन का समय हुआ पता ही नहीं चला।

रात का भोजन बाहर आँगन में ही किया गया। डैड ने बचपन में खाए सत्तू की लिट्टी की माँग पेश की थी। सुनते ही पिंकी-विकी ने नाक-भौं चढ़ाया और अपने लिए सूप, ब्रेड व अंडे बनवा लिए। दोनों विदेशी बच्चों के लिए लिट्टी ही विशेष व्यंजन बन गया। दादी ने गोबर के उपलों को खाट के निकट ही रखवा लिया। गोल-गोल आटे की सत्तू भरी लिट्टियाँ उनमें डाल दी गईं और गर्म घी के साथ मजे से खाया गया। इस प्राचीन ढंग से बेक की गई पेस्ट्री में कितना सोंधा स्वाद था। उन्हें क्या पता उपले कहाँ से आए थे?

खाते-खाते अगले दिन का प्रोग्राम बनने लगा।

''अब यहाँ म्यूजियम तो है नहीं'', पिंकी बोली, ''क्या दिखाऊँ तुम्हें? हमीरपुर छोटी जगह है। अब मुंबई, दिल्ली होता तब अच्छा लगता। उन्हें देख पता चलता, इंडिया कैसा है। कितने स्मार्ट और पढ़े-लिखे लोग हैं यहाँ।''

''हमीरपुर देखकर लगता होगा कि तुम किसी गाँव में आ गए हो।'' विकी हँस कर बोला।

''मुझे बहुत रोचक लग रहा है सब कुछ'', पद्मिनी ने गंभीरतापूर्वक आश्वासन दिया।

''मेरे लिए तो सब एक बड़ा एडवेंचर है।'' राहुल ने खुश होकर कहा, ''रात के अंधेरे में बाहर बैठकर खाना पकाने और खाने में कितना मजा आया। लालटेन जली है, नीले आकाश की छत है और यह रस्सी की बनी अजब-सी चारपाई है। पर मैं सचमुच का एक गाँव देखना चाहूँगा।''

''गाँव?'' विकी उछला, ''हमीरपुर भी विलेज ही है।''

''नहीं!'' पिंकी ने समझाया, ''इसका मतलब रियल विलेज से है। जहाँ लोग केवल हट में रहते हैं। हमारे आसपास कई ऐसी जगह है। चलो, कल इन्हें दिखा दें!''

''कहाँ ले चलें?'' विकी सोचने लगा, ''हाँ, वे जो खंडहर हैं, उनके पास बसा एक छोटा-सा रियल विलेज है। वहीं चला जाए।''

© RSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

पद्मिनी की नीली आँखें रोशनी में चमक उठी।

''खंडहर? यानी टूटे-फूटे ध्वस्त भवन? कब के हैं? क्या वे बहुत प्राचीन हैं?'' वह उत्सुकतावश उछल कर खड़ी हो गई।

उसकी उत्सुकता देख पिंकी हँसने लगी। ''इतना सब कुछ हमें नहीं मालूम। हमने केवल दूर से उन्हें देखा है। पास जाने की कभी इच्छा नहीं हुई। टूटी-फूटी दीवारों को देखने में मेरी रुचि तो नहीं है।''

''मुझे है।'' पद्मिनी बोली, ''मैंने बताया न, मुझे इतिहास में विशेष रुचि है। पुराने खंडहर में खोज व अन्वेषण करने मैं अनेक बार पाठशाला से गई हूँ। हमने काफी अध्ययन भी किया है इस विषय पर। किस प्रकार प्राचीन भग्नावशेष पर खोज की जाती है और समय व इतिहास की जानकारी ली जाती है। इस सब का मुझे थोड़ा-बहुत ज्ञान है। मैं अवश्य देखना चाहूँगी उन खंडहरों को।''

''मैं भी। शायद उधर कुछ दुर्लभ पक्षियों का भी संकेत मिल जाए।'' राहुल बोला, ''मैं अपना कैमरा ले चलूँगा ताकि पक्षियों के चित्र खींच सकूँ।''

''उल्लू और चमगादड़ के सिवाय और क्या मिलेगा?'' विकी ने हँसते हुए कहा, ''खंडहरों में यही सब तो पाए जाते हैं।''

''वे भी ठीक रहेंगे।'' राहुल खुशी-खुशी बोला, ''चमगादड़ भी एक ऐसा पक्षी है जो हर जगह नहीं मिलता और फिर भारतीय चमगादड़ कैसे होते हैं, मैं अवश्य देखना चाहूँगा। पाठशाला में प्रकृति-विज्ञान के लिए यह चित्र रोचक होंगे। हम अवश्य इन खंडहरों में चलेंगे।''

पद्मिनी को लगा जैसे पिंकी-विकी इस बात पर बहुत खुश नहीं थे। लेकिन उसने मन ही मन तय कर लिया कि वह खंडहरों को अवश्य देखेगी। यदि वे नहीं जाना चाहेंगे तो वह और राहुल ही चले जाएँगे। उन्हें हिन्दी आती ही थी। कोई कठिनाई नहीं होगी नक्शा देखते हुए वे स्वयं घूम आएँगे।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

शब्दार्थ

म्यूजियम (संग्रहालय)–वह स्थान जहाँ एक ही अथवा अनेक प्रकार की चीजों का संग्रह हो।

उत्सुक – प्रबल इच्छा

दुर्लभ – जिसे पाना सहज न हो, जो जल्दी न मिले।

अन्वेषण – खोज

सामीप्य – नजदीक में, पास में

भग्नावशेष (भग्न + अवशेष)– खंडहर, टूटे हुए अवशेष; **अतीत** – बीता हुआ।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से-

1. सभी लोग घर की सफाई क्यों कर रहे थे?
2. पद्मिनी और राहुल को पिंकी-विकी की कौन-सी बात खटकती थी ?
3. पद्मिनी के उत्सुकता का क्या कारण था?
4. राहुल और पद्मिनी को अपनी गाँव क्यों अच्छा लगा?
5. **किसने कहा, किससे कहा और क्यों कहा?**

   (क) अच्छा किया जो इन्हें हिन्दी सिखाई।

   (ख) ''ओ हो! आई एम सो सॉरी''

   (ग) अपनी भाषा होते हुए भी न जाने क्यों वे सदा अंग्रेजी ही बोलते हैं।

   (घ) अच्छा, यही है तुम्हारी बेटी?

   (ङ) लगता है बेटी माँ जैसी है। वही नीली आँखें और काले बाल । बड़ी सुन्दर निकली है।

पाठ से आगे-

1. इस कहानी में किसकी भूमिका आपको अच्छी लगी और क्यों?
2. क्या आपको लगता है कि यह कहानी अधूरी है यदि 'हाँ' तो क्यों?
3. सोचिए, इस कहानी के अन्त में अगले दिन क्या हुआ होगा?
4. अगर आपके यहाँ कोई सम्बन्धी आए तो आप क्या-क्या करेंगे?

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

व्याकरण–

1. **निम्न शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए ।**

अशुद्ध	शुद्ध
प्राचिन	....
विदेसी	....
खंढहर	....
भगनावसेस	....
मयूजियम	....

2. **निम्न शब्दों के वचन बदलिए**

एकवचन	बहुवचन
अतिथि	....
....	आँखें
गाड़ी	....
मेंढ़क	....
....	कहानियाँ
....	सम्बन्धियों
खंडहर	....
....	दीवारों

3. **इन वाक्यों में सर्वनाम शब्द को रेखांकित कीजिए ।**

(क) "अच्छा, यही है तुम्हारी बेटी ?"

(ख) वह उसकी मदद करने लगा ।

(ग) जो ढूँढ़े उसे मिले ।

(घ) मैं अवश्य देखना चाहूँगी उन खण्डहरों को ।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

4. खाली स्थान को जानवरों की बोली से भरिए :-

मेंढक .....

घोड़ा .....

हाथी .....

कुत्ता .....

शेर .....

गधा .....

बकरी .....

कुछ करने को-

1. आपके घर पर किसी खास अवसर पर कौन-कौन सम्बन्धी/रिश्तेदार आते हैं? उनकी सूची बनाइए।
2. क्या आपको भी दादी/नानी कोई कहानी सुनाती है? कहानी सुनते समय आप क्या महसूस करते हैं? अपनी कक्षा में सुनाइए।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED